कोविड–19 के समय में भारत की विदेश नीति

डॉ0 सोनी यादव

सहायक प्रोफेसर (संविदा)
मानविकी एंव सामाजिक विज्ञान विभाग
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल
विश्वविद्यालय, जौनपुर।

शोध सारांश–

वर्तमान समय में अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश चुनौतीपूर्ण है। हम द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था के लिए सबसे अधिक डर के माहौल में जी रहे हैं। स्वास्थ्य आपातकाल के रूप में शुरू हुई इस स्थिति का विस्तार, आर्थिक विघटन, भू–राजनीतिक आघात और अभूतपूर्व परिणाम की सामयिक चुनौती के रूप में हुआ है। हम इन अपार कठिनाईयों से कैसे निपटते हैं, और क्या हम उनमें से कुछ को अवसरों में बदलने में सक्षम हैं? यह एक राष्ट्र के रूप में हमारे भविष्य के प्रेक्ष्यपथ को प्रभावित करेगा।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति एक गतिशील अवधारणा है इसमें अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का परिप्रेक्ष्य यद्यपि बड़ी तीव्रता से परिवर्तित होता है फिर भी निरन्तरता की कुछ प्रवृत्तियां भविष्य के नवीन मोड़ों की तरफ संकेत कर जाती है, जैसे–चार दशक तक चला शीत युद्ध का अवसान जहां दो प्रमुख खेमों में बँटे विश्व में नवीन घटनाओं को जन्म दे गया, वहीं भावी विश्व में अमेरिका की भूमिका में बढ़ोत्तरी देखने को मिली। कालान्तर में जन्मा नवीन युग परा–सैद्धान्तिक युग कहलाया जिसे आल्बिन टाफ्लर जैसे–विचारक तृतीय लहर के रूप में देखते हैं तो कार्ल काटस्की जैसे विचारक परा–साम्राज्यवादी युग कहते हुए दोहरे शोषण का प्रतिविश्व तलाशते हैं, और बर्लिगर जहां शीतयुद्धोंतर विश्व को युगे–साम्यवादी काल का नाम देते हैं तो डेविड हेल्ड दोहर लोकतान्त्रिकरण का समय। सिद्धान्त की तरह अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध भी बहुत जटिल है, इस जटिलता के पीछे अनेक विरोधाभाषों का विद्यमान होना है।

शोध प्रविधि–प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन का प्रारूप परम्परागत विधि है जिसमें विदेशनीति से सम्बन्धित पुस्तक, लेख, आलेख समाचार पत्र, इण्टरनेट आदि के माध्यम से जानकारी ली गई है।

मुख्य शब्द–कोविड–19, अन्तर्राष्ट्रीय, कालान्तर, सैद्धान्तिक, बहुध्रुवीय, अर्थव्यवस्था, अन्तःनिर्भरता, बहुपक्षीय, उपमहाद्वीप, वैश्विक, पर्यावरण, आधुनिकीकरण।

अध्ययन के उद्देश्य–प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय विदेशनीति के समक्ष प्रमुख चुनौतियों और भारत द्वारा कोविड–19 के समय राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किये जा रहे प्रयासों का वर्णन है।

प्रस्तावना–भारत एक विकासशील राष्ट्र है। यह बहुत तेजी से कई पक्षों के साथ विकास के मार्ग पर अग्रसर है। भारतीय विदेश नीति के समक्ष मूल चुनौती यह सुनिश्चित करना है कि भारत, अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय के साथ उस रूप में जुड़ सके जो वर्तमान वास्तविकताओं के अनुरूप भी हो और उत्तरदायी भी हो।

हमारा देश अन्तर्राष्ट्रीय हितों को ध्यान रखने वाला देश है। बड़ी संख्या में हमारे देश की मानवीय शक्ति विदेशों में है। हमारी अर्थव्यवस्था, आर्थिक बेहतरी, वैश्विक आपूर्ति श्रृखंलाओं से जुड़ी है। हम सेवा क्षेत्र में एक शक्ति के केन्द्र हैं। हम दुनिया को एक आपस में जुड़े हुए, सीमारहित वैश्विक बाजार के रूप में देखते हैं। इसलिए भारत वैश्वीकरण के लिए प्रतिबद्ध है। यद्यपि, हम मानते हैं कि कोविड–19 वैश्विक महामारी के समय इसकी कमियां और मौजूदा स्वरूप की सीमाएं सामने आयी है। यह विशुद्ध आर्थिक एजेण्डा से संचालित है। प्रधानमंत्री ने जी–20 सम्मेलन में अपने सम्बोधन में कहा था कि वैश्वीकरण को मानव जाति के सामूहिक हितों को आगे बढ़ाना चाहिए और उसकी व्यवस्था, निश्पक्षता, समानता तथा मानवता पर आधारित होनी चाहिए। यह मानव केन्द्रित प्रक्रिया होनी चाहिए।

भारत मानव–केन्द्रित अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था विकसित करने में रचनात्मक भूमिका में रहा है तथा विकासात्मक अनुभव को साक्षा करने में भागीदार देशों के साथ मिलकर काम किया है। कोविड–19 महामारी के दौरान अपने कई मित्र और भागीदार देशों की सहायता की है। हम हकीकत में सुरक्षा प्रदाता रहे है। इसके साथ ही हमने रचनात्मक और प्रगतिशील एजेण्डों वाले अन्तर्राष्ट्रीय सौर गठबन्धन और आपदा प्रतिरोधों, अवसंरचना सम्बन्धी जैसे अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हम न केवल वसुधैव कुटुम्बकम यानि पूरी दुनिया एक परिवार है में विश्वास करते हैं–बल्कि 'निष्काम कर्म' यानि बिना किसी कामना के कर्म करने में विश्वास करते हैं। प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी ने जी–20 और गुटनिरपेक्ष आन्दोलन, वर्चुअल शिखर सम्मेलन, ग्लोबल बैक्सीन शिखर सम्मेलन और संयुक्त राष्ट्र आर्थिक एवं सामाजिक परिषद के उच्च स्तरीय खण्डों में भाग लिया और दक्षिण एशियाई नेताओं की बर्चुवल बैठक बुलाई।

कोरोना महामारी के समय में भारत डिजिटल कूटनीति में सबसे आगे रहा है। पहले से सूचीबद्ध शिखर सम्मेलनों के अलावा, भारत ने आस्ट्रेलिया और यूरोपीय संघ के साथ वर्चुवल शिखर सम्मेलन में भाग लिया है। हमने ब्रिक्स, शंघाई सहयोग संगठन और आर0आई0सी0 की मंत्रीस्तरीय बैठकों में भाग लिया। प्रधानमंत्री और विदेशमंत्री ने इस अवधि के दौरान 150 से अधिक डिजिटल और वर्चुवल बैठकें की हैं। हम अपने विदेशनीति कार्यों को जारी रखने के प्रयासों में स्फूर्ति से जुट रहे हैं। हमारी विदेशी नीति का उद्देश्य पड़ोसी को प्राथमिकता देने की रही है, यह पड़ोसी देशों के साथ अपने रिश्तों को व्यापक रूप से आगे बढ़ाने और मजबूत करने की हमारी नवीनीकृत प्राथमिकता को रेखांकित करता है। इसके अलावा बिम्स्टैक संरचना के प्रति हमने प्रतिबद्धता भी दर्शायी है।

हमने लुक ईस्ट नीति को आगे बढ़ाकर उसे एक्ट ईस्ट नीति कर दिया है। जिसके तहत आसियान देशों के साथ सम्बन्धों को सड़क, समुद्री और हवाई सम्पर्क में सुधार के माध्यम से मजबूत किया जा रहा है, ताकि अपने पूर्वोत्तर राज्यों को इन देशों से जोड़ने पर विशेष ध्यान दिया जा सके। पिछले पांच वर्षों में, थिंक वेस्ट–खाड़ी और पश्चिम एशियाई देशों में पहुंच, हमारी विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण स्तम्भ बन गया है। अफ्रीका के साथ हमारे सम्बन्ध राजनीतिक और आर्थिक दोनों मार्चों पर मजबूत हुए है। राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के स्तर पर अफ्रीकी देशों में 34 यात्राएं की गयी है। हाल के वर्षों में भारत और अमरीका के सम्बन्धों में विस्तार हुआ है और वे व्यापक वैश्विक रणनीतिक भागीदारी तक पहुंच गए है। रक्षा, सुरक्षा और आतंकवाद से निपटना दोनों देशों के बीच भागीदारी के महत्वपूर्ण स्तम्भ है। बढ़ते हुए व्यापार तथा निवेश, अनुसंधान एवं विकास, नवाचार, स्वास्थ्य सम्बन्धी सेवाओं और अंतरिक्ष क्षेत्र में सहयोग भी हमारे एजेण्डे के महत्वपूर्ण घटक है। अमेरिका के साथ महत्वपूर्ण ऊर्जा भागीदारी ऊर्जा सुरक्षा के लिए आवश्यक है। यूरोपीय यूनियन हमारा महत्वपूर्ण मित्र है, जिसका सहयोग हमारे कई स्तरों पर जीवन्त हैं। 01 जुलाई 2020 में आयोजित 15वें भारत–यूरोपीय संघ शिखर सम्मेलन ने बहुआयामी साझेदारी को साकार करने की दिशा में दोनों पक्षों के दृढ़ संकल्प और दृष्टिकोण को प्रदर्शित किया। शिखर सम्मेलन के पश्चात् जारी भारत यूरोपीय संघ महत्वपूर्ण भागीदारी 2025 के लिए दिशा निर्देशक में इस प्रतिबद्धता को शामिल किया गया है। रूस के साथ हमारे सम्बन्ध न केवल रक्षा, अंतरिक्ष, परमाणु विज्ञान और प्रौद्योगिकी आदि जैसे क्षेत्रों में घनिष्ट हुए हैं बल्कि, ऊर्जा, निवेश में सहयोग जैसे गैर–पारंपरिक और नए क्षेत्रों को शामिल कर उनमें विस्तार भी किया गया है। यह वर्ष भारत–रूस राजनीतिक भागीदार का 20वां और विशेष तथा महत्वपूर्ण भागीदार का 10वां वर्ष है।

हम अपने आस–पड़ोस में कई चुनौतीपूर्ण स्थितियों का सामना कर रहे हैं। हम इन समस्याओं को हल करने के लिए पूरी तरह से काम करेंगे। हमारी क्षमताएं तथा संसाधन बढ़ रहे है और चुनौती मिलने पर हम आवश्यक रणनीति तथा कार्यनीति अपनाने के लिए हमेशा तैयार रहेगें। हमारे पास आने वाले वर्षों में एक चुनौतीपूर्ण और बहुपक्षीय एजेण्डा है। हम जनवरी 2021 को दो साल के कार्यकाल के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में अस्थायी तौर पर शामिल होंगे। हम जी–20, ब्रिक्स और संघाई सहयोग संगठन के अध्यक्ष पद को भी प्राप्त करने वाले हैं। ये वैश्विक स्तर पर हमारी बढ़ती प्रतिष्ठा की पहचान है, और हमारे लिए अपनी अवधारणाओं, आकांक्षाओं तथा प्राथमिकताओं को व्यक्त करने का अवसर भी है। आतंकवाद का सामना करना हमारी सबसे महत्वपूर्ण चुनौतियों में से एक है। भारत ने सीमा पार आतंकवाद को झेला है और वह लगातार इसका सामना कर रहा है। हम आतंकवादियों को नियन्त्रित करने, उनकी मदद करने और उन्हें धन तथा आश्रय देने वालों के खिलाफ हमेशा पूरी उर्जा के साथ कार्यवाही करते रहे हैं। आतंकवादियों और उनके प्रयोजकों को अलग–थलग करने के हमारे प्रयासों से हमारे प्रति वैश्विक समर्थन बढ़ा है।

भारतीय विदेशनीति को अंतरिक्ष, साइबर वर्ल्ड और जैविक जैसे नए क्षेत्रों में गैर–पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियों से भी जूझना होगा। भारत को वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला का केन्द्र बनाना हमारी विदेशनीति की प्राथमिकताओं में से एक है। यह 'आत्मनिर्भर भारत' के दृष्टिकोण के अनुरूप भी है।

भारत ने कोरोना महामारी के माध्यम से प्रदर्शित किया है कि वह वैश्विक समुदाय का एक जिम्मेदार सदस्य है। हम दूरदर्शी होने में विश्वास करते हैं जो हमें महामारी के बाद की दुनिया में अच्छी स्थिति में खड़ा करेगा। वैश्विक महामारी के समय भारत में उत्पादित हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन और पेरासिटामॉल जैसी दवाओं की मांग में अचानक बहुत वृद्धि हुई। हम अपने देश के लिए इन दवाओं का पर्याप्त भण्डार सुनिश्चित करने के बाद दुनिया भर में अपने मित्रों और उपभोक्ताओं को बड़ी मात्रा में इनकी आपूर्ति करने में कामयाब रहे। भारत ने लॉकडाउन के कारण ढुलाई सम्बन्धी चुनौतियों के बावजूद 150 से अधिक देशों को ये दवाएं और चिकित्सा सामग्री की आपूर्ति की। सागर और संजीवनी जैसे अभियानों के तहत कई देशों में चिकित्सा, त्वरित कार्यवाही दलों की तैनाती, स्वास्थ्य पेशेवरों और स्वास्थ्य क्षमताओं के संयोजन की पहल और आवश्यक चिकित्सा उत्पादों की आपूर्ति जैसे प्रयासों से हमने सुरक्षा प्रदाता और प्रथम प्रतिक्रियाकर्ता की तरह अपनी सांख को मजबूत किया। हमने विकास साझेदारी के माध्यम से बड़ी मात्रा में संसाधनों को लगाया है। यह सबका साथ, सबका विकास में हमारे विश्वास का एक व्यावहारिक प्रदर्शन है। अपने नागरिकों और प्रवासियों को समय पर प्रभावी और कुशल सार्वजनिक सेवायें प्रदान करना हमारी प्राथमिकता है। बन्दे भारत मिशन के तहत दस लाख से अधिक भारतीय भूमि, समुद्र और हवाई मार्ग से स्वदेश लौट आये है। वैश्विक महामारी दुनिया के साथ हमारी संलग्नता के तरीकों सहित, सभी क्षेत्रों पर एक स्थायी छाप छोड़ रही है। तेजी से बदलते परिवेश में, भारतीय कूटनीति ने उभरती चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए आवश्यक कौशल और अनुकूलन क्षमता को दर्शाया है। इसके अलावा उसने वैश्विक समुदाय के एक जिम्मेदार और रचनात्मक सदस्य के रूप में अपनी साख को मजबूत भी किया है।

निष्कर्ष–

वर्तमान समय में जब तक संघर्ष के स्थायी बादल छाये रहेगें, भारत के विकास में भी स्थिरता और तेजी नहीं आ सकेगी। अपने क्षेत्र में उग्रवाद और धार्मिक कट्टरवाद की ताकतों के साथ संघर्ष में उन पर विजय पाना हमारी विदेशनीति और राष्ट्रीय सुरक्षा की अत्यन्त महत्वपूर्ण प्राथमिकता होगी। यह नए बहुध्रुवीय विश्व का उदय हो रहा है और भारत इसके एक ध्रुव के रूप में विकसित हो रहा है। साथ ही यह आशा की जाती है कि भारत वैश्विक सुरक्षा की नई जिम्मेदारियों की निभाएगा और विदेशनीति अपने भोलेपन और अल्हड़पन की अवस्था से अब प्रौढ़ावस्था में प्रवेश करेगी। भारत को अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा सम्बन्धी नीति को भी अपनी विदेशनीति के अनुरूप बनाना होगा और पुराने दोस्तों को खोए बिना ही नए दोस्त बनाने होगें।

संदर्भ सूची

1. Slechar, Chalse P.: "An Introduction; The International Relations" New York, (1961), p. 55
2. जौहरी, जे0सी0: ''अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति'' स्टेलिंग पब्लिकेशन, नई दिल्ली, (1992)
3. Panda, Rajaram: "Regionalism as on approach to peace" Gandhi Marg, New Delhi; (1983), p. 45-46
4. Mishra, Chaitanya: "Towers a Theoretical Framework of regional cooperation in South Asia" In Regional Cooperation and Development in South Asia Vol. 11 Bhabani Sen Gupta at. all. New Delhi, (1936) p. 132
5. सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार नेहरू स्पीच नई दिल्ली वाल्यूम–1 (1949) पेज 300–303
6. Raju, V.B.: "Search for Regional Cooperation" Commerce (Bombay) (1961) p. 15-19
7. Rao, M.V. Subha: "Some Views on an Asia Common Market" in South Asian Regional Cooperation K. Satyamurtye (Hyderabad) (1982), p. 26
8. Muni, S.D.: "Political Issueless and South Asia Cooperation Mainstream, New Delhi, Vol. XXIV Nos. 13 & 19 Nov. 30, 1985, p. 27-28
9. Kapoor, Pradeep: "SAARC" Whither Regional Cooperation" Democratic World, New Delhi, Vol. XII Nos. 35, Aug, 28, 1983 p. 6-7
10. Ministry of External Affairs-SAARC: Meeting of Foreign Minister (New Delhi) 1983, p. 59.